पुस्तक की समीक्षा

छद्म साम्यवादियों की शल्यक्रिया करता है उपन्यास विद्रोही मुग्धानंद

प्रो० कमल प्रसाद बौद्ध

प्राचार्य, रधुनन्दन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, मठियापुर, दानापूर, पटना

हिन्दी के मशहूर व्यंग्य कथा लेखक,कवि,उपन्यासकार एवं नाटककार श्रीकान्त व्यास की सद्य:प्रकाशित हिन्दी व्यंग्य उपन्यास 'विद्रोही मुग्धानंद' एक कालजयी कृति है। यह क्लासिक उपन्यास है। इनकी कथानक बेजोड़ है। संवाद की अदायगी देखने लायक है। उपन्यास की भाषा अद्भुत है। पाठकों को उपन्यास प्रारभं से लेकर अंत तक बाँध कर शब्र पाने में पूर्णत: सफल है। उपन्यास की भाषा-शैली, कथोपकथन,चरित्र एवं घटना सभी चीजें जीवंत हो उठी हैं। इसके पूर्व इनकी अनेक व्यंग्य पुस्तकें प्रकाशित होकर पाठको के बीच अपनी दमदार प्रस्तुति दर्ज करा चुकी हैं। कितने लोग तो इनके व्यंग्य पढ़कर दीवाने हो चले हैं।

व्यंग्य नाविक की तीर की तरह होता है जो देखने में तो छोटा होता है लेकिन लक्ष्य भेदन में अचूक होता है। व्यंग्यात्मक लेखन का फलक बहुधा लघु होता है। व्यंग्य काव्य या निबंध आकारिक रूप से छोटा होता है। व्यंग्य का फलक बड़ा हो सकता है,उसमें विचारों का सागर हिलोरें मार सकता है, खट्टे-मीठे भावों को समेटते हुए ' उपन्यास 'रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। कहीं भी पाठक कथानक से विलग नहीं होता हैं। प्रत्युत उसकी उत्कंठा उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है, इसे सच कर दिखाया है, हिन्दी के चर्चित रचनाकार श्रीकान्त व्यास जी ने अपने हिन्दी व्यंग्य उपन्यास 'विद्रोही मुग्धानंद' में। इनके उपन्यास में व्यंग्य की गजब मारक क्षमता है।

श्रीकान्त व्यास जी का व्यंग्य उपन्यास 'विद्रोही मुग्धानंद' पाठकों को बीसवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश के कालखण्ड में ले जाता है- तब समाजवाद- साम्यवाद के विचारो कों बडी़ उत्सुकता से दुनिया सुन रही थी। सर्वहारा और बुर्जुआ वर्ग के संघर्ष की कहानी, दुनिया के मजदूरो, एक हो!..... लगभग सौ वर्ष गुजर गये हैं। ..... किस रूप में है मार्क्स और लेनिन जैसे महान विचारकों के सपनों की दुनिया..... उसकी हकीकत से रु-ब-रु कराती है व्यंग्यात्मक औपन्यासिक कृति 'विद्रोही मुग्धानंद'।

महान विचारकों टूटने की गाथा है' विद्रोही मुग्धानंद '-साम्यवाद का विद्रूप चरित्र नायक वस्तुत: मुग्धानंद भारत के सामन्तवाद की भूमि पर उगे विकृत साम्यवाद का प्रतीक है। भोग लिप्सा के साथ धार्मिक अंधविश्वास का पुट इस रचना में है। सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ, प्रशासनिक भ्रष्टाचार,छल छद्म का खेल, स्वर्ग-नरक की अवधारणायें ..... सब पर श्रीकान्त व्यास जी का व्यंग्य वाण चला है।

इनकी भाषा शैली पर डॉ0 शिववंश पाण्डेय की टिप्पणी ध्यातव्य है-'' हिन्दी व्यंग्य उपन्यास 'विद्रोही मुग्धानंद' के लेखक श्रीकान्त व्यास की भाषा पर अद्भुत पकड़ है। मुग्धानंद गिरगिट जैसे अपने चोले का रंग बदलता है, वैसे-वैसे लेखक मुग्धानंद के रूपों और विचारों सें पाठकों को अभिज्ञ कराने के लिए अपनी भाषा का ककहरा भी बदलता जाता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि व्यास जी लिखित यह व्यंग्य उपन्यास विधा की सभी अनिवार्य अहर्ताओं का पालन करते हुए व्यंग्य की मर्मन्तुद व्यंजकता को अत्यंत सफलतापूर्वक अपने पाठकों के समक्ष परोसता है।

'उपन्यास' में संवाद सरल एवं विचारोत्तेजक है। कतिपय स्थलों पर 'वाक्य' अमित भावों से गुम्फित है- ये पाठक के हृदय पर अमिट छाप छोड़ता है।

'उपन्यास' रचनाकार की रची-बसी दुनिया की झाँकी होती है। व्यास जी को समाजवाद-साम्यवाद को पढ़ने का मौका मिला होगा,कॉमरेडों से किसी सीमा तक सरोकार रहा होगा- निर्लिप्त भाव से ही सही, लेकिन इन्होंने लेखकीय चिन्तन साहित्य पटल पर एक जीवंत तस्वीर उकेरा है।

'विद्रोही मुग्धानंद' उपन्यास पर अपने विचार रखते हुए डॉ. पंडित विनय कुमार ने लिखा है- ''श्रीकान्त व्यास

उन चर्चित व्यंग्यकारों में परिगण्य है जिनकी लेखनी धारदार एवं निरंतर आग उगलती रही है। पेशे से पत्रकार एवं लेखक श्रीकान्त व्यास ने पिछले करीब तीन दशक से हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में अनवरत सर्जनारत रहे हैं और उसी का प्रतिफल आज 'विद्रोही मुग्धानंद' व्यंग्य उपन्यास के रूप में आपके सामने है।..... श्रीकान्त व्यास ने वैश्विक समस्या विशेष रूप से भारत के साम्यवाद जनित नक्सलवाद को बुद्विजीवियों के समक्ष सम्पूर्णता के साथ रखा है। अक्सर स्वयंभू कॉमरेड शोषितों एवं पीड़ितों की मुक्ति की उद्घोषणा करते हैं, किन्तु वास्तविकता है कि उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा से काटकर रखना चाहते हैं तथा स्वयं सामन्ती जीवन जीते हैं तथा सत्ता की राजनीति करते हैं। ''श्रीकान्त व्यास के इस उपन्यास 'विद्रोही मुग्धानंद'के संवाद भी सदा याद रखे जायेंगे। उपन्यास के कुछ संवाद यहॉ नमूने के तौर पर प्रस्तुत हैं-

नक्सलियों ने बड़ी मेहनत से मुग्धानंद जैसे विद्रोही और सशक्त क्रांतिकारी साथी तैयार किया था जिन्हें बाद में एरिया कमांडर का पद सौंपा गया। नक्सलियों को अब मुग्धानंद का हाथ से निकलना खतरा-सा दिखने लगा। मुग्धानंद को नक्सलियों ने हजारीबाग के एक सुदूर घने जंगल में आग्नेयाशात्र चलाने, बम विस्फोट करने, बारूद बिछाने, गुरिल्ला आक्रमण करने सहित और भी कई तरह के खतरनाक प्रशिक्षण वर्षो तक दिया था..... मुग्धानंद परिवर्तनशील शख्शियत हैं। पहले सत्ता परिवर्तन के पक्षधर रहे फिर, व्यवस्था परिवर्तन के और अब स्वयं के परिवर्तन के पक्षधर हैं। .....शराब और अफीम के नशे से भी ज्यादा खतरनाक होता हैं किसी वाद का नशा होना .. .. चाहे वह साम्यवाद का नशा हो या मार्क्सवाद का अथवा कोई और वाद का नशा। इनकी कोहड़ानुमा विशाल खोपड़ी में काव्य प्रतिभा का भंयकर रूप में विस्फोट हो चुका है। ..... काशी, कावा घूम आये पर फिर भी दिल क्यों काला है? नकली ध्यान लगाये बैठे फेर, रहे क्यों माला है? ..... इस इंटरनेट के जमाने में अब उम्र उम्र की बंदिशें टूट सी गए हैं। क्या बालिग और क्या नाबालिग, सभी इंटरनेट के माध्यम से गरमागरम और उत्तेजक दृश्य बेंखूबी देखते है। ..... मुग्धानंद के जीवन में कभी स्थिरता नहीं रही। इनका चरित्र कुछ-कुछ बहुरूपिये सा है। ये सुलझे हुए नहीं, बल्कि उलझे हुए व्यक्तित्व के स्वामी हैं। लाल रंग के दिवाने है। खूनी क्रांति के पक्षधर है। शराब, शबाब और कबाव से इन्हें परहेज नहीं। एक तरफ सुर साम्यवादी, लेनिनवादी और माओवादी विचारों की वकालत करते, तो दूसरी ओर खुद ही भोगवादी प्रवृत्ति में लिप्त रहते। व्यवहार में पाखंड साफ झलकता है। ..... एक बात जान लें, सरकारी स्कूल भले ही सरकार की नजर में विद्या का मंदिर है मगर मेरी नजर में वह खुराफातियों का अड्डा है। वह हमारे कैडर के विस्तार में बाधक है। इलाके में स्कूल रहने से बच्चे पढ़-लिखकर होशियार, चालाक और बुद्धिमान हो जायेंगे । जब उसके पास अपनी बुद्धि हो जायेगी और उसके अन्दर ज्ञान का विकास होने लगेगा, तो वे मार्क्सवाद, लेनिनवाद, माओवाद, समाजवाद, गॉधीवाद, लोहियावाद, आम्बेडकरवाद और व्यासवाद में तुलनात्मक अध्ययन करने लगेंगे। इससे सम्यवाद, मार्क्सवाद और लेनिनवाद खतरे में पड़ जायेंगे।''

उपन्यास लिखना यो ही कठिन कार्य है, उसमें भी व्यंग्य उपन्यास लिखना तो और भी कठिन कार्य है। हिन्दी साहित्य में मात्रात्मक रूप में व्यंग्य उपन्यास का लेखन बहुत कम हुआ है। इस कठिन कार्य को साहस के साथ साधने का मुकम्मल प्रयास किया है श्रीकान्त व्यास ने अपने हिन्दी व्यंग्य उपन्यास 'विद्रोही मुग्धानंद' में। इस उपन्यास का प्रकाशन जून 2022 में हुआ है। इसे मुक्त फलक प्रकाशन,पटना (बिहार) ने खूबसूरत रूप में छापा है। इसके हार्ड बाउंड और पेपर बाउंड दोनों संस्करण बाजार में उपलब्ध हैं। हार्ड बाउंड का मूल्य जहॉ 400 रुपये रखा गया है वहीं पेपर बाउंड का 350 रुपये। उपन्यास के पृष्टों की संख्या 159 हैं। श्रीकान्त व्यास का यह उपन्यास हिन्दी साहित्य के लिए बड़ी उपलब्धि है।

उपन्यासकार ने छद्मभेषी दोहरे चरित्र जीने वाले कॉमरेडों की बेहतरीन शल्यक्रिया की है 'विद्रोही मुग्धानंद' के जरिये। श्रीकान्त व्यास की अब तक तीन दर्जन मौलिक पुस्तकें हिन्दी और अंगिका भाषा में प्रकाशित हो चुकी हैं। व्यास जी हरफनमौला रचनाकार है। गद्य एवं पद्य, दोनों विधाओं में इनकी जबरदस्त पकड़ है। इन दोनों विधाओं में अपनी लेखनी से साहित्य जगत में लोहा मनवाया है।

पुस्तक : विद्रोही मुग्धानंद (हिन्दी व्यंग्य उपन्यास)
लेखक : श्रीकान्त व्यास
प्रकाशकः मुक्त फलक प्रकाशन, बनर्जी पथ, दरियापुर गोला,पटना-800004